श्री पार्श्वनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण

सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज

रचयित्री

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

Website : www.jainswastisandesh.com

Link to Facebook : swastibhushanmataji

श्री 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2023, ज्ञानतीर्थ, मुरैना (म.प्र.)
पावन निर्देशन - परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी
पावन अवसर पर प्रकाशित

कृति : श्री पार्श्वनाथ विधान

सप्तम संस्करण : 1100 प्रतियाँ

प्रकाशन वर्ष : 2023

न्यौछावर राशि : 25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्रकाशक : श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थान :

1. **स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. **राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 9784853787

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

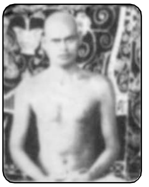

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

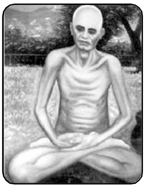

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

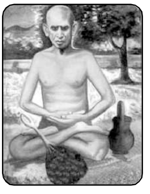

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

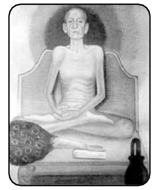

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

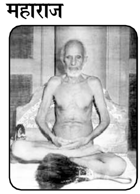

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

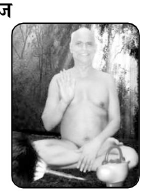

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी) वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

कमठ के मठ में नहीं पारस के आश्रम में रहना है

राजा अरविन्द ने कमठ को काला मुँह करके गधे पर बिठाकर राज्य से निष्कासित कर दिया। सारे गांव वालों के मुँह कमठ की बुराई थी, कि मरुभूति की अनुपस्थिति में कमठ को उसकी पत्नी के साथ ऐसा दुराचार नहीं करना चाहिये था। राजा ने मरुभूति को युद्ध के लिये भेजा है, अब उसे पता चलेगा तो वह क्या सोचेगा।

मरुभूति जब लौट कर आया, सारी कहानी ज्ञात हुई। समय बढ़ता गया, राजा अरविंद ने मुनि दीक्षा ग्रहण की। एक दिन मरुभूति को अपने भाई कमठ की याद आई और वह ढूँढ़ने निकल पड़ा। कमठ जंगल में आश्रम के बाहर हाथ पर शिला रख कर कठोर तपस्या कर रहा है। अन्दर क्रोध की अग्नि जल रही है और बाहर मिथ्या तप चल रहा है।

मरुभूति कमठ के चरणों में गिर गया। भाई क्षमा करो और घर चलो। तुम्हारे बिना घर में अच्छा नहीं लगता। कमठ ने ना सोचा न समझा क्रोधित हो हाथ की शिला मरुभूति पर पटक दी। मरुभूति के प्राण पखेरु उड़ गये। और मरकर उसी जंगल में हाथी बना।

एक दिन हाथी की नजर राजा के वक्षस्थल पर बने विशेष चिन्ह पर पड़ी और उसे जाति स्मरण हो गया। मुनिराज के चरणों में जाकर बैठ गया। प्रायश्चित पश्चाताप के आँसू की गंगा आँखों से बहने लगी। मुनिराज ने अवधि ज्ञान से पूर्व भव को जानकर संबोधन किया तथा अगुव्रत ग्रहण कराये। अब वह हाथी श्रावक बन गया, प्रतिदिन श्रावक के आवश्यक पूर्ण करता है। बस यहीं से आत्मा का उत्थान प्रारम्भ हो गया। इधर कमठ मरकर कीचड़ में कुक्कुट सर्प हुआ और हाथी को काट लिया। मरुभूति 12 वे स्वर्ग में और कमठ पाँचवे नरक में गया। मरुभूति वहाँ से आकर मुनि बने और कमठ उसी वन में अजगर बना और मुनिराज को निगल लिया। मरुभूति 16 वे स्वर्ग और कमठ छटवे नरक गया, स्वर्ग से आकर मरुभूति वज्रनाभि चक्रवर्ती और कमठ भील बना। चक्रवर्ती दीक्षा ले वन में तपस्या करने लगे, भील ने पूर्व बैर से उनका शरीर

बाणों से छेद दिया। मरुभूति अहिमिन्द्र बने और कमठ सातवे नरक में गया। स्वर्ग से आकर आनंद कुमार हुये और दीक्षा ली कमठ सिंह बना और मुनिराज को खा लिया। मरुभूति आनत स्वर्ग में इन्द्र बने व कमठ सातवे नरक गया। मरुभूति वहाँ से आकर पार्श्वनाथ बने कमठ उनका तापसी नाना बना और मरकर संवर देव बना जिसने प्रभु पारसनाथ पर ओले शोले पत्थर पानी बरसाये!

एक तरफ क्रोध और दूसरी तरफ क्षमा, एक तरफ आग दूसरी तरफ पानी। एक तरफ अमृत औद दूसरी तरफ जहर का यह संगम ज्यादा दिन न टिक सका। अपनी त्याग और तपस्या से मरुभूति के जीव ने अपनी आत्मा को इस प्रकार मजबूत बनाया कि उस पर जहर असर नहीं कर सकता।

एक दिन माँ वामा ने सोलह स्वप्न देखे, अपने स्वामी से उसका फल पूछा तो उत्तर से अति प्रसन्न हुई। तीर्थंकर प्रभु को गर्भ में आया जान वह फूली न समाई। महल के आँगन में रत्नों की बारिश होने लगी। देवियाँ माँ की सेवा करने लगी। जब प्रभु ने जन्म लिया स्वर्ग में घंटे बजने लगे। सौधर्म 7 प्रकार की सेना सहित आया और सुमेरु पर्वत पर ले जाकर जन्माभिषेक किया। असीम खुशियों का वह समय लोगों के सौभाग्य जगा रहा था।

एक दिन बालक पारस कुमार जंगल में घूमने गये वहाँ एक तपसी लकड़ियाँ जलाकर उसके सामने बैठ तपस्या कर रहा था। तीन ज्ञान के धारी कुमार ने अपने अवधि ज्ञान से जाना कि लकड़ी के अन्दर नाग-नागिनी का जोड़ा है। बालक पारस कुमार ने तपसी को कहा कि तेरा ये कैसा मिथ्या तप है जिसमें हिंसा हो रही है। क्रोधित तपसी ने लकड़ी को चीरा तो जलते नाग-नागिनी बाहर आये कुमार ने उन्हें प्रभु का नाम सुनाया। उन्होंने तीर्थंकर पारस कुमार के वचन अंतिम समय में सुने, उसका जीवन तो धन्य हो गया और वे मरकर धरणेन्द्र पद्मावती हुये।

धीरे-धीरे समय आगे बढ़ा, युवा पारस कुमार को वैराग्य आया और वे आत्मा को परमात्मा बनाने चल दिये वन की ओर। मुनि दीक्षा ले कर्मों की जंजीर तोड़ने लगे। क्रूर जानवरों के बीच निर्भय होकर विचरण करने लगे। आपके प्रभाव से जीव-जन्तु आपसी बैर भाव भूल जाते थे।

तापसी मरकर व्यंतर संवर देव बना। एक दिन विमान में बैठ आकाश मार्ग से जा रहा था। नीचे पारस प्रभु के प्रभाव से विमान अटक गया। क्रोधित संवर ने नीचे देखा तो पुराना बैर याद आया और अपनी शक्ति के मायाजाल से पत्थरों की बौछार करने लगा मूसलाधार बारिश और ओले शोले बरसाने लगा। भयंकर आवाजों से डराने लगा। पर जिसे आत्मा की आवाज सुन रही हो उसे बाहर की आवाज सुनाई नहीं देती, जिसे आत्मा के दर्शन हो रहे हो उसे बाहर की रूपवान और कुरूप वस्तुएं नजर नहीं आती। पाँचों इन्द्रियाँ अन्तर्मुखी हो गई हैं।

अध्यात्म के सागर में डूबे जिसे आनंद के रत्न मिले गये हो उन्हें किनारे पर खड़े लोगों का पता ही नहीं चलता। चेतन भोगी, चेतन रसिया, चेतन बसिया, जड़ को छोड़ बहुत दूर, चेतन के पास पहुँच गये हैं। इधर मिथ्या दृष्टि देव पूरी शक्ति के साथ उनकी अडिग चेतना को कंपायमान करना चाहता है पर निष्फल रहा। अध्यात्मिक गंगा स्नान में ऐसा आनंद आया कि किनारे पर आना ही भूल गये।

इसी उपसर्ग के बीच 4 कर्मों की संपूर्ण निर्जरा से केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। उपसर्ग का प्रभाव बन्द हो गया। सौधर्म इन्द्र का सिंहासन डोल उठा, कुबेर ने समवशरण की रचना की। कमठ के जीव ने अपनी माया प्रभावहीन देख, प्रभु के केवल ज्ञान के प्रभाव से प्रभावित हो प्रभु के चरणों में सच्चे हृदय से आया और समर्पित हो सम्यदर्शन प्राप्त कर लिया।

भवों-भवों का बैर अब समाप्त हुआ। 9 भव तक एक तरफा बैर चलता रहा। एक अग्नि था दूसरा पानी। और अन्त में जीत पानी की हुई। जिसने अग्नि बुझा दी। क्रोध हार गया और क्षमा जीत गई।

वर्तमान में हर व्यक्ति पारसनाथ का भक्त है और कार्य कमठ के कर रहा है। मुख में पारसनाथ है और आचरण कमठ है। कल्याण कैसे सम्भव होगा। सबसे अधिक उपसर्ग प्रभु पारसनाथ पर ही हुये हैं और भक्त भी सबसे ज्यादा पारसनाथ के हैं। अर्थात् जीव महान संकट सहन करने पर बनता है न कि क्रोध का प्रतिकार करने पर।

अतः पार्श्वनाथ जैसे गुण हमारे अन्दर भी आयें इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ इस विधान की रचना की है। आप इस विधान को स्वयं करे और सबको करवायें।

आ. 105 स्वस्ति भूषण

भक्त के बस में हैं भगवान

दाणं पूया मुक्खं सावय
धम्मे न सावयां तेण विणा!

आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी कहते कि श्रावकों के दान और पूजा मुख्य है इसके बिना श्रावकों का धर्म नहीं होता!

परम तत्व आत्मतत्व की प्राप्ति के लिए ग्रहस्थ के लिए यदि कोई प्रयत्न है तो वह पूजा है और यह पूजा के लिए हमें किसी न किसी आवलम्बन की आवश्यकता होती है जिस प्रकार हमें अपने चेहरे का दाग देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता होती है उसी प्रकार हमारी आत्मा में लगे हुए क्रोध मान माया लोभ कषाय रूपी दाग को देखने के लिए सभी प्रकार के दागों (दोषों) से रहित अरहन्त भगवान की प्रतिमा का आवलम्बन लेना पड़ता है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान ने यह आवलम्बन न लेकर स्वयं को संसार से मुक्त कर लिया कमठ जैसे जीव को अपनी क्षमा के बल पर सम्यग्दृष्टि बना दिया जो जीव नौ भवों तक श्री पार्श्वनाथ भगवान के जीव को त्रास देता रहा ऐसे जीव को क्षमा करने की शक्ति यदि प्राप्त हुई तो भगवान की पूजा भक्ति के बल पर ही प्राप्त हुई क्योंकि जो जिनेन्द्र भगवान की पूजा करता है वह जीव संतोष भाव को धारण करता है कहा भी गया है।

जो नर नित पूजा करे वह नर इन्द्र समान
मनुष मजूरी देत है क्यों न दे भगवान

इस भक्ति के बल पर श्री वादीभसिंह सूरि महाराज जी को कुष्ट व्याधि रातोंरात गायब हो गई थी इसी भक्ति के बल पर श्री समन्तभद्राचार्य महाराज ने शिवपिण्डी में से श्री चन्द्रप्रभ भगवान के दर्शन किये थे।

भगवान की भक्ति करने से हमारे अन्दर अनेक दुःख पीड़ा आदि सहन करने की शाक्ति प्राप्त होती है परम पूज्यनीय माताजी भक्ति रस की वह प्रवाहिका हैं जिन्होंने भक्ति रस से सरोवर अनेक रचनाओं को जन्म दिया है।

यदि कोई पूजा के माध्यम से भी अपने आप को पारस बनाना चाहता है तो उसे यह पंक्तियाँ जो पूज्य माताजी के द्वारा रचित है इनका पूजा करते करते चिंतन मनन जरूर करना चाहिए।

पुरुषार्थ प्रबल तप करके ही आतम को पारस कर दीना
निज कर्मों के सब कष्ट हरे सबके दुखड़ों को हर लीना
ऐसे पारस प्रभु की भक्ति करने को भक्त ये आये हैं
मनहर मनहर मूरत प्रभु की दर्शन कर मन हर्षाये हैं

इन पंक्तियों में भक्ति तो है ही लेकिन जिस कारण के लिए कार्य किया जा रहा है परमात्म तत्व की अनुभूति के लिए जिनेन्द्र भगवान का स्तवन किया जा रहा है वह कारण भी इन्हीं पंक्तियों में समाहित है पूज्य माताजी ने इतने सरल शब्दों के वस्तु तत्व को समझा दिया है साधारण से साधारण व्यक्ति इन भावों को समझ सकता है और यथार्थ कहूँ तो पूज्य माताजी का सम्पूर्ण जीवन वृत्त ही सम्पूर्ण विधान पूजाओं चालीसा आदि की रचना में परिलक्षित हो जाता है।

श्री स्वास्ति कल्याण समिति (रजि.) के माध्यम से इस कृति के पाँच संस्करण अभी तक निकल चुके हैं यह षष्टम संस्करण आप तक प्रकाशित होकर पहुँच रहा है।

पूज्य माताजी के द्वारा रचित सभी कृतियाँ को श्रावक समूह से तो सराहना मिल ही रही है साथ ही साथ विद्वत जगत से भी सराहना मिल रही है।

इस कृति के माध्यम से सभी सुधि श्रावकजन भगवान की सम्यग्प्रकारेण अर्चना कर मुक्ति गमन के प्रयासों को सार्थक करें।

क्योंकि भक्ति में ही वह शक्ति है जिसके माध्यम बना कर अपना तथा पर का कल्याण किया जा सकता है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा श्रावकजन इन कृतियों का लाभ उठायें और परम पूज्यनिया आर्यिका रत्न 105 स्वस्तिभूषण माताजी का जीवन सुदीर्घ हो स्वस्थ हो ताकि उनके द्वारा बताये गये पथ पर चल कर हम सभी अपना कल्याण कर सकें! माताजी के चरणों में कोटीश वन्दामी-वन्दामी-वन्दामी।

शालू दीदी
(संघस्थ)

माण्डला

श्री पार्श्वनाथ विधान

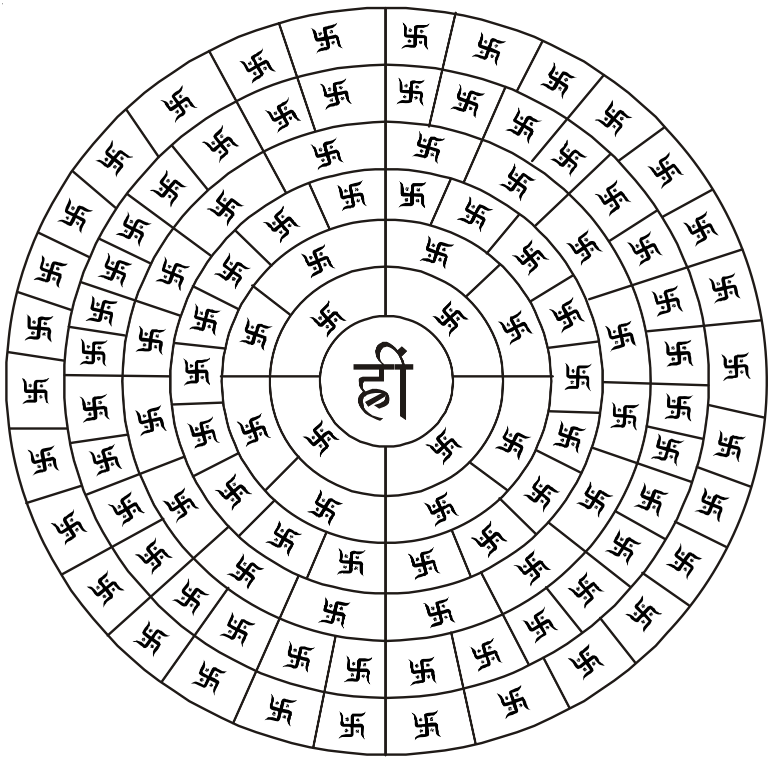

श्री पार्श्वनाथ विधान

स्थापना (शम्भू छन्द)

पुरुषार्थ प्रबल तप करके ही, आतम को पारस कर दीना।
निज कर्मो के सब कष्ट हरे, सबके दुखड़ों को हर लीना॥
ऐसे पारस प्रभु की भक्ति, करने को भक्त ये आये हैं।
मनहर-मनहर मूरत प्रभु की, दर्शन कर मन हर्षाये हैं॥

दोहा

चरणों में बैठे प्रभो, करने उज्ज्वल भाव।
भंवर बीच में फँस रहे, पार लगाओ नाव॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

स्थापना

मैं क्रोध रहित मैं मान रहित, माया और लोभ न मेरे हैं।
पर मान रहा सबको अपना, इससे गतियों के फेरे हैं॥
तेरी पूजा से पारस प्रभु, क्रोधादि कषायें दूर करें।
जल सम निर्मल हों भाव मेरे, कर्मो को अपने शीघ्र हरें॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी का जब अपमान होय, तब दुख अग्नि में जलता है।
पर मार्दव धर्म के धारी को, सुख ज्ञान सदा ही मिलता है॥
चन्दन जैसे पारस प्रभु की, पूजा से मान घटायेंगे।
चंदन चरणों में अर्पित कर, आतम की शांति पायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

माया चंचल मन है चंचल, दोनों ने मिलकर पाप किया।
आतम में मन स्थिर होता, सारे पापों को नाश दिया॥
न जनम दुबारा होय प्रभो, स्थिरता ऐसी पाना है।
अक्षत से पावन पद पूजूँ, बस द्वार तुम्हारे आना है॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय के सुख ललचाते हैं, लोभी की तृष्णा बढ़ जाये।
पापों के बीच में मँडरा कर, जीवन पूरा करता जाये॥
आतम गुण की खुशबू पाने, प्रभु चरणों तेरे आये हैं।
पुष्पों से पूजूं पारस को, चरणों में शीश झुकायें हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान को पाना चाहो तो, भागो मत अपने पास रहो।
संयम रख जीवन सुन्दर कर, बस ज्ञान प्रवाह में नित्य बहो॥
संयम पुरुषार्थ सफल होगा, हम विजय स्वयं पर पायेंगे।
चरणा नैवेद्य से पूज रहे, भक्ति के गीत भी गायेंगे॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उजियाला पथ में है लेकिन, हम आलस कर ना चलते हैं।
चाहे तो भगवन बन सकते, पर भोगों में नित बहते हैं॥
पारस प्रभु राह दिखाते हैं, साहस कर पथ पर चालेंगे।
दीपक ले पूजा करके ही, आतम की ज्योति जगा लेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को हमी बुलाते हैं, फल दुख को पा पछताते हैं।
कर्मों के बन्धन टूट जायें, अर्जी ले चरणों आते हैं॥
मेघों के पीछे दिनकर है, कर्मो के पीछे जिनवर हैं।
लेकर के धूप पूजा करते, मेरे प्रभु मनहर-मनहर हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के फल हमें सुस्वादु लगें, शिवफल हमको ना भाते हैं।
इस लिये प्रभु भव सिन्धू से, हम पार नहीं हो पाते हैं॥
पूजा का फल हमें मोक्ष मिले, हम शरण आपकी आये हैं।
फल लेकर पूजा करते हैं, प्रभु भव दुःख से घबराये हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतस के द्वार न खोले हैं, आतम शांति कैसे आये।
बस ज्ञान ज्योति का दीप जले, तब द्वार शांति का खुल जाये॥
सच्ची सुबहा तब ही होगी, जड़ तज चेतन का ध्यान करें।
ले अर्घ्यं पार्श्व पूजा करते, कर्मो को अपने शीघ्र हरें॥

ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्यावली

चौपाई

धर्म रतन धरती पर आये, भौतिक रतन पूर्व छा जाये।
गर्भ कल्याणक इंद्र मनाये, वामा स्वप्न देख मुस्काये॥

ॐ ह्रीं वैशााख कृष्ण द्वितीयां गर्भमंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदित सूर्य सम तेज तुम्हारा, जन्म हुआ फैला उजियारा।
जन्म कल्याणक सभी मनायें, अश्वसेन घर खुशियां छायें॥2॥

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग आग सम लगने लागी, सुप्त आत्मा ज्ञान से जागी।
मोह तजा हो गये दिगम्बर, छोड़ दिये आभूषण अम्बर ॥3॥

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तपोमंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार कर्म ने पीछा छोड़ा, केवलज्ञान ने नाता जोड़ा।
तीर्थंकर का महल बनाया, दिव्य वाणी अमृत बरसाया ॥4॥

ॐ ह्रीं चैतकृष्ण चतुर्थी दिने ज्ञानमंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म आप विनशाये, जा मुक्ति में ध्यान लगाये।
सावन सुदी सप्तम थी प्यारी, पूजा भक्त करें नित थारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तमी दिने मोक्षमंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलय

अनंत चतुष्टय अर्घ्यावली

तर्ज चौबीसी पूजा

दर्शन अनंत को धार, जगत प्रकाश किया।
त्रिलोक झलकता ज्ञान, भ्रम तम तोड़ दिया॥
श्री पार्श्वनाथ प्रभु हम, धर्म का धन चाहें।
योगों से भोग तजें, मुक्ति पथ राहें॥1॥

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण ज्ञान का भार, घाती कर्म नशे।
आतम में लीन हुये, जग में नाहि फंसे॥2॥
श्री पार्श्वनाथ...

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित ना जग से आप, सच्चा सुख पाया।
कुछ बूंद हमें मिल जायें, पाने मैं आया॥3॥
श्री पार्श्वनाथ...

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अनंत प्रगटाये, कोई न जीत सके।
बाधा तज आतम ध्यान, कोई न खींच सके॥4॥
श्री पार्श्वनाथ...

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

करम नाश कर धर्म से, किये करम चकचूर।
अनंत चतुष्टय के धनी, ज्ञान देय भरपूर॥

ॐ ह्रीं प्रथम वलये अनंत चतुष्टय सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (श्री फल चढ़ायें)

द्वितीय वलय

अष्ट प्रातिहार्य सहित अर्घ्यावली

गीता छंद प्रभु पतित पावन

प्रभु शोक न करते कभी, और तरु अशोक भी संग है।
दर्शन करें प्रभु नित्य तेरे, रोग का ना रंग है॥
हे आत्म धन के स्वामी मेरे, धन धरम का चाहिये।
पारस प्रभो कंचन बना दो, शुद्ध भक्ति चाहिये॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य आसन पर न बैठे, आत्म आसन लीन हैं।
शोभित सिंहासन हो रहा है, गायें गुण की बीन हैं॥6॥
हे आत्म धन...

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन जग के अधिपति, सर छत्र छाया देवता।
पर कर्म धूप न लागती, वैभव जगत को दीखता॥7॥
हे आत्म धन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चंवर की पंक्तियाँ, शोभित करें जिन देव को।
इन्द्रों ने आ सेवायें कीनी, मैं करूँ प्रभु सेव को॥8॥
हे आत्म धन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चौसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तेज जग में फैलता, रवि चन्द्र द्युति फीकी पड़ी।
तन तेज भामंडल उजाला, रश्मि कर जोड़े खड़ी॥9।।
हे आत्म धन...

ॐ ह्री अर्हं श्री भामण्डल प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणगान दुंदुभि कर रही, यशगान भक्त भी गा रहे।
पारस की महिमा का अतिशय, भक्ति धारा में बहें॥
हे आत्म धन के स्वामी मेरे, धन धरम का चाहिये।
पारस प्रभो कंचन बना दो, शुद्ध भक्ति चाहिये॥10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुंदुभि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस प्रभू ही कल्पतरु हैं, वांछा पूरी नित करें।
पर कल्पवृक्ष समीप ठाड़े, भक्तो की झोली भरें॥11॥
हे अत्मा धन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन दिव्यवाणी को प्रभू की, भक्त आतम तृप्त हैं।
कर्णों में अमृत रस घुले, पापी सदा संतप्त हैं॥12॥
हे आत्म धन...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

दिव्य ध्वनि गुंजित हुयी, तरू अशोक की छाँव।
प्रातिहार्य आठों रहे, प्रभु वैभव दर्शाये॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्वितीय वलये अष्ट प्रातिहार्य सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (श्री फल चढ़ाये)

तृतीय वलय

18 महादोष रहित गुण अर्घ्यावली

चौपाई

भूख ने ऐसा डाला डेरा, नहीं शांत खायें जग फेरा।
पारस मेरी भूख मिटा दो, तृप्त आत्मा शीघ्र करा दो॥13॥

ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्यास आपको नहीं सताये, पानी पी प्यासे हम आये।
प्यास शान्त हो अमृत देना, मुझको अपनी शरण में लेना॥14॥

ॐ ह्रीं तृषा महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्भय हो मुक्ती के वासी, डर कर बैठे जगत प्रवासी।
सातों भय से मुक्त करा दो, आतम ज्ञान की ज्योति जला दो॥15॥

ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध विजयी है नाम तुम्हारा, क्षमावान कर रूप है न्यारा।
क्षमा दान दे क्रोध भगा दो, समता रस का पान करा दो॥16॥

ॐ ह्रीं क्रोध महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता तज चिंतन जब करते, तभी कर्म के पर्वत हरते।
चिंताओं से ऊबे हैं हम, भक्ती रस में डूबे हैं हम॥17॥

ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति रवाहा।

जरा रोग है बड़ी बिमारी, प्रभु आपसे यह भी हारी।
हम तेरी शरणा में आये, हमें बुढ़ापा कभी न आये॥18॥

ॐ ह्रीं जरा महा दोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग भाग कर दूर हुआ है, वीतराग को नहीं छुआ है।
अशुभ राग तज शुभ में आऊँ, शुभ को तज मुक्ति में जाऊँ॥19॥

ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही हो पारस जिनवर, मोहित कीना जग को मनहर।
मोह तजूँ सच्चा सुख पाऊँ, आ चरणन में अर्घ्यं चढ़ाऊँ॥20॥

ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म हटे तब रोग भागते, तभी आत्म को स्वस्थ पावते।
औषध खाकर कर्म न भागे, करें तपस्या आतम जागे॥21॥

ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म बाण निर्वाण से तोड़ा, जा मुक्ती से नाता तोड़ा।
मृत्यु नहीं निर्वाण को पाऊँ, इससे चरणन अर्घ्यं चढ़ाऊँ॥22॥

ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तन है नहीं पसीना, चन्दन सम खुशबू को लीना।
तप से तन को शुद्ध किया है, भक्त ने आ आशीष लिया है॥23॥

ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो प्रसन्न न खेद सताये, मुद्रा मुक्ती मार्ग दिखाये।
खेद भेद मैं सुख को पाऊँ, इससे ही पारस गुण गाऊँ॥24॥

ॐ ह्रीं विषाद महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम वैभव चरण में आया, पर अभिमान जरा न भाया।
मार्दव गुण के हो भण्डारी, तारो प्रभु अब मेरी बारी॥25॥

ॐ ह्रीं मद महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का जब प्रेम सुहाया, रति कर्म को दूर भगाया।
भक्तों की प्रीति स्वीकारो, प्रभु भक्तों की ओर निहारो॥26॥

ॐ ह्रीं रति महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक जब ज्ञान में झलकें, नहि टिमकार हिलें न पलके।
विस्मय रहा न कोई जग में, बाधायें ना आई पथ में॥27॥

ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नींद तुम्हें प्रभु जरा न आये, नींद के बादल हम पर छाये।
सोये हुये जगत में जीते, इसीलिये हम सुख से रीते॥28॥

ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं दुबारा जन्म तुम्हारा, हमें जनम से दो छुटकारा।
आने-जाने का क्रम तोड़ें पारस प्रभु से नाता जोड़ें॥29॥

ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म अरति को दूर भगाया, आत्म प्रेम का मार्ग दिखाया।
स्वारथ के संसार को त्यागो, बस अपनी आतम में जागो॥30॥

ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)
दोहा

दोष अठारह से रहित, श्री पारस भगवान।
दोष हमारे दूर हों, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तृतीय वलये अठारह महा दोष रहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (श्री फल चढ़ाये)

चतुर्थ वलय

(तर्ज : नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

षोडस गुण अर्घ्यावली (भुजंग प्रयात)

किया दर्श सच्चा, जगत सत्य जाना।
ये चेतन ही भाया, जगत है बेगाना॥
ये सोलह ही भावों, को भा मुक्ति जाये।
करूँ साधना मैं, चरण सर झुकाये॥31॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय गुण के धारी, नहीं मान आया।
विनय गुण मैं पाऊँ, ये सर को झुकाया॥32॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरा शील कील, करम की निकाली।
धरम बाग सींचा, फली फूली डाली॥33॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा ज्ञान अभ्यास, को नित बढ़ायें।
इसी ज्ञान से नैया पार लगायें॥
ये सोलह ही भावों, को भा मुक्ति जाये।
करूँ साधना मैं, चरण सर झुकाये॥34।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत वस्तु नश्वर, नहीं तुमको भायी।
संवेग ज्ञान की, ज्योति जलायी॥35॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं संवेग भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ती के अनुसार, त्याग किया है।
औ त्याग से भव सिन्धु, पार किया है॥36॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करम को जलाने को, करते तपस्या।
तो तप ने करी दूर, सारी समस्या॥37॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि में, अग्रज बने हैं।
इसी से करम नाश, सौख्य घने हैं॥38॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन का दुख हरने, सेवा भी करते।
सेवा में आनंद, लेकर सुमरते॥39॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं वैयावृत्य करण भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिंहत भक्ति से, भाव सुधारे।
कि जिनवर छवि देख, नयना निहारे॥
ये सोलह ही भावों, को भा मुक्ति जाये।
करूँ साधना मैं, चरण सर झुकाये॥40।।

ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''शिष्यों'' के गुरु ये, आचार्य प्यारे।
करें भक्ति इनकी, जगत से ये तारे॥141॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी की संगत ने, हमको सुधारा।
बहुश्रुत की भक्ति से, निज को निहारा॥142॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन शुद्ध प्रवचन, की भक्ति करूँगा।
मैं सुन के वचन, शीघ्र भव से तरूँगा॥43॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं प्रवचन करण भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक करते, करम तब ही भागे।
निजातम की ज्योति, से ज्ञान भी जागे॥44॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस की चर्चा जो, घर-घर करोगे।
है भावन प्रभावन, तो भव से तरोगे॥45॥
ये सोलह ही...

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधर्मी भाई से, वात्सल्य करना।
नहि द्वेष रख कर, धरम को गिराना॥
ये सोलह ही भावों, को भा मुक्ति जाये।
करूँ साधना मैं, चरण सर झुकाये॥46।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना गुण युक्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य
दोहा

सोलह कारण भाव बने, पारस जिन भगवान।
भायें भावना भाव से, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ वलये षोडस कारण भावना सहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (श्री फल चढ़ायें)

पंचम वलय
पार्श्व गुण अर्घ्यावली (दोहा)

तीन लोक झलका रहा, ज्ञान स्वरूप विशेष।
यह शक्ति मुझको मिले, कर्म रहे ना शेष॥47॥

ॐ ह्री ज्ञान चक्षु प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षय न कभी होगा प्रभू, अक्षर अक्षय आप।
अक्षय पद की भावना, मेटो सब संताप॥48॥

ॐ ह्री अक्षय धन प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाग्य विधाता पार्श्व हैं, भाग्य करो सौभाग्य।
तेरी भक्ति नित करूँ, मिट जाये संताप॥49॥

ॐ ह्री सौभाग्य सुख प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या ईश कहावते, विद्या का दो दान।
विद्या से अघ काट कर, बन जायें भगवान॥50॥

ॐ ह्री सर्व विद्या प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत सुख पाया प्रभो, कम न ज्यादा होय।
पारस प्रभु की भक्ति से, पाप कर्म को खोय॥51॥

ॐ ह्री शाश्वत पद प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ श्रेष्ठ संसार में, गुण के हो भण्डार।
गुण पाऊँ मैं भी प्रभो, हो जाये उद्धार॥52॥

ॐ ह्री ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चारु छवि मूरत तेरी, विश्व मूर्ति कहलाये।
दर्शन कर वंदन करूँ, चरणन शीश झुकाये॥53॥

ॐ ह्री आत्म लालित्य प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय प्राप्त तुमने करी, इंद्रिय संयम धार।
नाम जिनेश्वर सुर कहें, भौतिक सुख की हार॥54॥

ॐ ह्री इंद्रिय विजय कराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विजेता तुम प्रभु, हारा हुआ हूँ मैं।
पाऊँगा आशीष को, करूँ कर्म का क्षय॥55॥

ॐ ह्री आत्म विजय कराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द

(तर्ज : प्रभु पतित पावन...)

छल औ कपट से ये जगत, संसारियों को लूटता।
तुम सच्चे बन्धु भव्यों के, कर्मो का पर्वत टूटता॥
कर्मो की आँधी पथ डिगाये, मार्ग दर्शन कीजिये।
भटकूँ जगत में मैं न भगवन, शरण अपनी लीजिये॥56॥

ॐ ह्रीं शुभचिंतक बंधुत्व प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिर्मयी है रूप तेरा, हम तमस में रह रहे।
अब ज्ञान रश्मि का उजाला, दो शरण तेरी गहे॥57॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही पारस भक्त का मन, मोहा शरणा आते हैं।
ये मोह जग का दूर हो, हम गीत तेरे गाते हैं॥
कर्मो की आँधी पथ डिगाये, मार्ग दर्शन कीजिये।
भटकूँ जगत में मैं न भगवन, शरण अपनी लीजिये॥58।।

ॐ ह्रीं मोह तम विनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धर्म चक्री धर्म से, जग कर्म चक्र को तोड़ा है।
यह चक्र मेरा तोड़ दो, नाता तुम्ही से जोड़ा है॥59॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मों न जग में अब दुबारा, कल्याण जन्म का कीना है।
मेरा जनम मेटो प्रभु, शरणा भगत ने लीना है॥60॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जगत माया तजी, अविनाशी सुख को पाया है।
जो नाम को रटता रहे, वह सुख खजाना पाया है॥61॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं क्षणभंगुर जग रहिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्याता हो ध्यान भी हो तुम्ही, और ध्येय मेरे ही बने।
मेरा समय इसमें ही बीते, कर्म भागेंगे घने॥63॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं ध्याता ध्येय ध्यान सुख प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम दिव्यता भंडार पाया, दिव्य शांति बांटी है।
लख दिव्य पावन रूप को, कर्मो की भ्रांति छांटी है॥64॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्म का झरना बहा, पर बूंद भक्त ने पाई थी।
प्रभु वाणी अमृत कर्ण में जा, भक्त मन को भायी थी॥
कर्मो की आँधी पथ डिगाये, मार्ग दर्शन कीजिये।
भटकूँ जगत में मैं न भगवन, शरण अपनी लीजिये॥65।।

ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति का सिन्धु आप में, अध्यात्म बन लहरा रहा।
पावन तुम्हारा नाम जप, भक्तों को शांति दे रहा॥66॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं चित्त शांति प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मार्ग पर प्रभु हम चलें, सन्मार्ग हमको दीजिये।
कर्मो के बन्धन तोड़ कर, मुक्ती के दर पर भेजिये॥67॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस प्रभू के दर्श की, इच्छा प्रबल मन में हुई।
हे नाथ दर्शन दो हमें, भावों की कलियां खिल गई॥68॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक जनम होवे मेरा, शरणा तेरी मिलती रहे।
कुछ और न इच्छा मेरी, छाया में हम पलते रहे॥69॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं जन्म-जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार कर भव सिन्धु को, शिवपुर में हम को जाना है।
शरणा में तेरी रहना है, फिर लौट के ना आना है॥70॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं शुद्ध आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल हृदय ने जीव पर, करुणा करी सुख दे दिया।
मैं भी बचूँ हिंसा करन से, भाव मन में भा लिया॥
कर्मों की आँधी पथ डिगाये, मार्ग दर्शन कीजिये।
भटकूँ जगत में मैं न भगवन, शरण अपनी लीजिये॥71।।

ॐ ह्रीं कोमल हृदय प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं जन्म मृत्यु और बाधा, से रहित सुख चाहता।
भव-भव की भटकन छूट जाये, वर यही मैं मांगता॥72॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित गुण प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं शुभ विचारों को धरूँ, जिससे कि शुभ आचार हो।
चंचल है मन स्थिर करूँ, जिससे धरम परचार हो॥73॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं जिन धर्म आचरण प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्ञान लक्ष्मी, मुक्ति लक्ष्मी, लक्ष्य पर ले जाती है।
धनवान लक्ष्मी का बनूँ, भक्तों को भी यह भाती है॥74॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाधा सतायें काम में, पूरा नहीं हो पाता है।
हे स्वामी बाधायें हरो, यह भक्त शरणा आता है॥75॥
कर्मों की आंधी...

ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज शेर चाल... दे दी हमें आजादी...
स्थिर हो मन ये मेरा ध्यान, साधना करूँ।

तेरे समान ध्यान से मैं, मुक्ति को वरूँ॥
चिंतामणि हे पार्श्वनाथ, रक्षा कीजिये।
गुणवान बना भक्त को, उद्धार कीजिये॥76॥

ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्याय हुआ मेरे साथ, न्याय कीजिये।
भक्तों की भक्ति पे जरा तो, ध्यान दीजिये॥77॥
चिंतामणि हे पार्श्वनाथ ....

ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के पद कष्ट, संकटों के ढेर हैं।
मुक्ति का पद मिले मुझे, चाहे कि देर है॥78॥
चिंतामणि हे पार्श्वनाथ ....

ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

कर्मों ने घेरा हमें, जाना है भव पार।
दे दो झोंका ज्ञान का, मिटे कर्म का भार॥

ॐ ह्रीं पंचम वलये पार्श्व गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री फल चढ़ायें)

षष्टम् वलय
पार्श्व गुण अर्घ्यावली
शेरचाल

भय ने किया भयभीत, डर के काम ना करते।
हैं अभय दाता स्वामी, सभी भय को हैं हरते ॥79॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने दिया शोक, जो संसार बढ़ाये।
तुम शोक रहित स्वामी, तेरी शरण में आये ॥
चिंतामणि हे पार्श्वनाथ, रक्षा कीजिये।
गुणवान बना भक्त को, उद्धार कीजिये॥80।।

ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जगत की माया से वैराग्य दिलाओ।
सुख दुख में समता रख सकूँ, ये शक्ति बढ़ाओ॥81॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं पार्श्व वाणी आत्म सात्, आत्म में करूँ।
जिनवाणी गंगा में नहा मैं, कर्म को हरूँ ॥82॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति जग की वस्तुओं से, मोह छुड़ाये।
तब ही अपूर्व शांति शीघ्र, आत्म में आये ॥83॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं अपूर्व शांति प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम मंत्र बन के, पाप भक्त के काटें।
हो कार्य सिद्ध भी सभी, बाधाओं को छांटें ॥84॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यात्म का अमृत पिये, वो अमर हो गये।
हमको भी मिले पीने, तो हम धन्य हो गये ॥85॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस प्रभु मृत्युंजयी, शुभ नाम को जपो।
मृत्युंजयी हम भी बनें, प्रभु नाम को भजो ॥
चिंतामणि हे पार्श्वनाथ, रक्षा कीजिये।
गुणवान बना भक्त को, उद्धार कीजिये॥86।।

ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चा है भगत भाव, शुद्ध कार्य सफल हो।
जिन देव की छाया में रहें, नाहिं विफल हो ॥87॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्रा प्रसन्न पार्श्व की, आनंद बढ़ाये।
पूजा विधान आपका, बाधा को हटाये ॥88॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगुण की खान मैं प्रभो, गुणवान बनाओ।
शुभ गुण की प्राप्ति हो हमें, भगवान बनाओ ॥89॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन है दर्श तेरा, आत्म शुद्ध कीजिये।
आतम का दर्श हो हमें, वरदान दीजिये ॥90॥
चिंतामणी हे पार्श्व.......

ॐ ह्रीं पावन आत्मा दर्शनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार में हर ओर, मन का युद्ध हो रहा।
हे पार्श्व तेरा ध्यान करूँ, शांति पा रहा॥
हम व्यस्त हों हम स्वस्थ हों, मुक्ति के पथ चलें।
पारस प्रभु ये भक्त, तेरी छाया में पलें ॥91॥

ॐ ह्रीं संसार द्वंद विनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार ना करें तो, भूख हमको सताये।
हम तेरे जैसे बनने को, प्रभु चरण में आये ॥
हम व्यस्त हों हम स्वस्थ हों, मुक्ति के पथ चलें।
पारस प्रभु ये भक्त, तेरी छाया में पलें ॥92॥

ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ वस्तुओं का मान, आत्मा को गिराता।
देता है यहाँ दुःख और, जग में फिराता ॥93॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे गुणों में नाथ वृद्धि, आप कीजिये।
यश कीर्ति मेरी बढ़े, सर्व सौख्य दीजिये ॥94॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के उपद्रव से प्रभु, कार्य ना होता।
पापों के मेघ जब हटें, शुभ बीज को बोता ॥95॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छायें पूरी होवें प्रभु, ध्यान दीजिये।
मन तुष्ट हो संतुष्ट हो, कुछ ज्ञान दीजिये ॥96॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का राग छाया, धर्म औषधि मिले।
होकर के स्वस्थ आत्मा, तो ज्ञान में खिले ॥97॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्छे निमित्त कर्म अच्छे, हमको करायें।
अच्छे निमित्त मिलते रहें, प्रार्थना गायें ॥
हम व्यस्त हों हम स्वस्थ हों, मुक्ति के पथ चलें।
पारस प्रभु ये भक्त, तेरी छाया में पलें ॥98॥

ॐ ह्रीं निमित्त प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस प्रभु पिता हमारे, भाग्य से पाये।
छाया सदा ही मिलती रहे, अब भाव ये भायें ॥99॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं प्रभु पितृ छाया प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे ऋद्धि सिद्धि नाथ, तेरी भक्ति मैं करूँ।
दो ऋद्धि भी हमें तो, दुष्ट कर्म को हरूँ ॥100॥
आतम में ध्यान लीन, महायश को पाया है।
जो तेरी पूजा को करे, यश पास आया है ॥101॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आनंद स्रोत झर रहा, जो ध्यान लीन हैं।
आनन्द मिले आत्म का, निज में प्रवीण हैं।॥102॥
हम व्यस्त हो...

ॐ ह्रीं महा आनंद प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या को छोड़ सभी जीव, मैत्री से रहें।
हो सच्चा ज्ञान प्राप्त, सभी भक्ति में बहें॥103॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है भाग्य हमारा ये परम गुरु, को है पाया।
इनकी शरण आके मिली, शांति की छाया॥104॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमें क्रोध नहीं महाक्रोध, स्वयं सताये।
हे जगत देव आपको पर, क्रोध ना आये॥1
हम व्यस्त हों हम स्वस्थ हों, मुक्ति के पथ चलें।
पारस प्रभु ये भक्त, तेरी छाया में पलें ॥105॥

ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु नाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण विश्व शांत हो, जीवन जिया करे।
शांति से ज्ञान प्राप्त हो, अमृत पिया करे॥106॥
हम व्यस्त हो.........

ॐ ह्रीं विश्व शांति कराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोक्ष में ले जाये, वो ही योग्यता पाऊँ।?
पाकर के त्याग तप को मैं, चरणों में आ जाऊँ॥107॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं दुख को सुख बना के, तृप्ति आत्म में पाऊँ।
आतम में धर्म ध्यान का, शुभ दीप जलाऊँ॥108॥
हम व्यस्त हो.......

ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

पारस छू कंचन बना, धन्य हुआ मैं आज।
भक्ति नित करता रहूँ, करता रहे समाज॥

ॐ ह्रीं षष्ठम् वलये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(श्री फल चढ़ायें)

जाप्य मंत्र (9 अथवा 108 बार)

ॐ ह्रीं अर्हं क्लीं क्रौं सर्व रोगोपद्रव विनाशनाय महा मृत्युंजयी संकट मोचन श्री पार्श्वनाथाय नमः।

जयमाला

त्रिभंगी

चैतन्य साधना, आत्मराधना, कर आतम को पाया है।
हम तुम्हें पुकारें, राह निहारें, भक्त दर्श को आया है॥

चौपाई

पारस चरण में वंदन मेरा, मिटता जनम मरण का फेरा।
नमन-नमन मन से करते हैं, झुक-झुक कर दुख को हरते हैं॥
पारस प्रभु को भाव नमोस्तु, प्राप्त होयेगी इच्छित वस्तु।
पारस प्रभु का ध्यान लगायें, ध्यान से जीवन धन्य बनायें॥
अग्नि से तप कुंदन कीना, लोहा पारस नाम का लीना।
जब भी नित्य कषाय जलाती, संग कर्म का बंध कराती॥
फिर संसार भ्रमण करवाये, भटक प्रभु के दर पर आये।
नगर बनारस में रस बनता, धर्म रसों के स्वाद को चखता॥
रत्नों के संग सुख की बारिश, खुशहाली-खुशहाली चहुँ दिश।
गर्भ जन्म तप ज्ञान को धारा, फिर निज आतम रूप निहारा॥
मोक्ष पाया सम्मेंद शिखर से, भक्त दर्श पाते हैं दर पे।
भक्तों के प्रभु दिल में बसते, दिल को मन्दिर तब ही कहते॥
जीवन तुम बिन मेरा सूना, तुम बिन दुख पाता हूँ दूना।
कमठ बैर कर बैर निकाले, पत्थर पानी ओले डाले॥
समता धर आतम के ध्यानी, इससे हुये थे केवलज्ञानी।
दस भव तक यह बैर चला था, किन्तु ध्यान का फूल खिला था॥
बैर-बैर को नहीं मिटाये, शांत भाव से इसे हटाये।
कमठ क्रोध का रूप दिखाये, पारस क्षमा का जल बरसाये॥
क्षमा नीर ने अग्नि बुझाई, कमठ ने प्रभु की शरणा पाई।
क्रोध हमें प्रभु नित्य सताये, नहीं बुलायें तब आ जाये॥
पश्चाताप भी करता हूँ मैं, पाप गठरिया भरता हूँ मैं।
क्रोध शांत हो शक्ति देना, क्षमा नीर से मन धो देना॥

समता सुमन खिलाये मन में, अब सुख आनंद हो जीवन में।
पारस रस ही मुझको भावे, नहीं जगत के रंग सुहावे॥
तेरी भक्ति कर हर्षित हूँ, तेरे चरणों आकर्षित हूँ।
चरण शरण की छाया देना, अपने सम की काया देना॥
मुक्ति पथ राही बन जायें, फिर मुक्ति की मंजिल पायें।
''स्वस्ति'' मुक्ति पाने आये, मुक्ति में प्रभु बनो सहाय॥

दोहा

''स्वस्ति'' भक्ति कर रही, करती है गुणगान।
चंदन शीतल छांव में, लेंगे हम विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री फल चढ़ायें)

पारस गुण कैसे लिखूँ, नहीं जरा भी ज्ञान।
तुम जैसा मैं बन सकूँ, बारंबार प्रणाम॥

॥ इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा

ध्यान करूँ अरिहंत का, बँदू सिद्ध अनन्त।
उपाध्याय आचार्य से, मिले मुक्ति का पंथ॥
श्री सम्मेद की भूमि से, पाया पद निर्वाण।
संकटहारी पार्श्व को, शत्-शत् करूँ प्रणाम॥

जय जय जय श्री पारस स्वामी, कर्म काट तुम हुए अकामी।
श्रद्धा भक्ति हृदय से ध्याऊँ, तुम चरणों में शीश झुकाऊँ॥
राजा अश्वसेन के प्यारे, जग जननी आंखों के तारे।
मां को सोलह स्वप्न दिखाए, वामा के जब गर्भ में आये॥
पौष कृष्ण एकादशी प्यारी, वसुधा पर आए अवतारी।
जंगल गये मंगल करने को, देखा वहाँ एक तपसी को॥
उसने लकड़ी खूब जलाई, अंदर नाग-नागिनी भाई।
पारस ने तब ज्ञान कराया, अर्द्ध जले अहि बाहर आया॥
उन्हें मंत्र नवकार सुनाया, पदमावती धरणेन्द्र बनाया।
बैर बांध तपसी मरता है, देव नाम संवर धरता है॥
इस जग को जब अथिर है जाना, फिर विराग का पहना बाना।
वन में जाकर ध्यान लगाए, इक दिन कमठ वहाँ पर आऐ॥
ओले शोले पत्थर पानी, बरसा कर की थी मनमानी।
ध्यान लीन प्रभु नहिं डिगे थे, सिंहासन देवों के हिले थे॥
आऐ पदमावती धरणेन्दर, सेवा की थी छत्र बनाकर।
समता से उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान का नीर बहा था॥
भक्ति करते देव चरण की, रचना हुई थी समवशरण की।
प्रभु ने फिर उपदेश दिया था, सबने सम्यक् ज्ञान लिया था॥
पत्थर को पारस सम करते, राग द्वेष के तम को हरते।
दर्शन जगह जगह है दीना, चमत्कार सबके संग कीना॥
सबसे ज्यादा भक्त तुम्हारे, तुम तो हो भक्तों के प्यारे।
गूंगे को दे दी थी वाणी, पढ़े बैठ कर वो जिनवाणी॥
लंगड़ा पर्वत दौड़ के चाले, अंधा तेरे दर्श को पाले।
खाली गोद में पुत्र है आवे, निर्धन की झोली भर जावे॥
पार्श्वनाथ की पूजा करते, सारे संकट को वो हरते।

गगन बीच है शिखर तुम्हारा, दूर दूर से दिखे नजारा॥
महिमा सुर नर मिल कर गावें, तो भी न पूरी कर पावें।
सिद्ध अनन्तों मोक्ष पधारे, उनको भी हैं नमन हमारे॥
रोग शोक संकट टल जावे, जो भी वंदन करने आवे।
पारस प्रभु के चरण पखारे, भाव शुद्ध हो आत्म निहारे॥
भक्तों ने की जय-जयकारा, पारस प्रभु का नाम पुकारा।
चढ़ते-चढ़ते थके जाते हैं, पर मन में शांति पाते हैं॥
प्रभु से शक्ति स्वयं ही आती, सब भक्तों को पास बुलाती।
श्रावण शुक्ला सप्तमी आई, श्री सम्मेंद की भूमी पाई॥
कड़ी तपस्या खड़ी चढ़ाई, श्रद्धा में मजबूती आई।
अंत समय जब ध्यान लगाया, गुफा शिला से मोक्ष है पाया॥
करूणा सागर करूणा कीजे, शुद्ध आत्मा का वर दीजे।
हम भक्तों की है प्रभु आशा, शिवपुर में हो मेरा वासा॥
स्वामी हम हैं दास तुम्हारे, इन नयनों से तुम्हें निहारें।
'स्वस्ति' चाहे शरण में रहना, और नहीं कुछ तुम से कहना॥

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय,
सुख समृद्धि सब लहे, मुक्ति तुरत ही होय।
पारस सम हैं पार्श्वनाथ, संकट हरण तीर्थंश,
चरण शरण में हूँ पड़ा, पाऊँ मुक्ति जिनेश॥

आरती श्री पार्श्वनाथ

तर्ज भक्ति बेकरार...

पारस तेरा ध्यान है, चरणों में प्रणाम् है।
आरती करने आये हम, लेकर तेरा नाम है॥

हो...वामा की आंखों के तारे, अश्वसेन सुत प्यारे जी-2
नगर बनारस जन्म लिया है, स्वर्ग से इंद्र पधारे जी-2
पारस तेरा...

हो...किया घोर उपसर्ग कमठ ने, समता भाव दिखाया जी-2
ओले-शोले पत्थर पानी, ऊपर से बरसाया जी-2
पारस तेरा...

हो...पद्मावती धरणेन्द्र ने आकर, प्रभु पर छत्र लगाया जी-2
केवल ज्ञान की ज्योति जगी तब, समवशरण रचवाया जी-2
पारस तेरा...

हो...गिरि सम्मेंद शिखर पर जाकर, मोक्ष महापद पाया जी-2
जब तक हमको मोक्ष ना मिलता, चरणों में ध्यान लगाया जी-2
पारस तेरा...

हो...जो भी शरण तुम्हारी आता, सबकी पीड़ा हरते हो-2
चिंतामणि हो कल्पवृक्ष सम, संभव कारज करते हो-2
पारस तेरा...

परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्रीसम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दशलक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान 17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंच कल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थंकर विधान संग्रह 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभु विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान, 37. श्री नन्दीशवरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -1, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-2, 41. श्री चरित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान, 46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान

काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहस नाथ स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यों की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभु पूजन (शाहपुर) 6. श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभु पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चंद्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान) 20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल)

गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. राग से वैराग्य की ओर 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। 12. टर्निंग पॉइण्ट (भाग-1, 2) 13. वीतरागी का आकर्षण 14. ऊँ नमः सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि 16. स्मार्ट कौन? 17. आप V.I.P. है